काव्य रत्नावली

संकलन

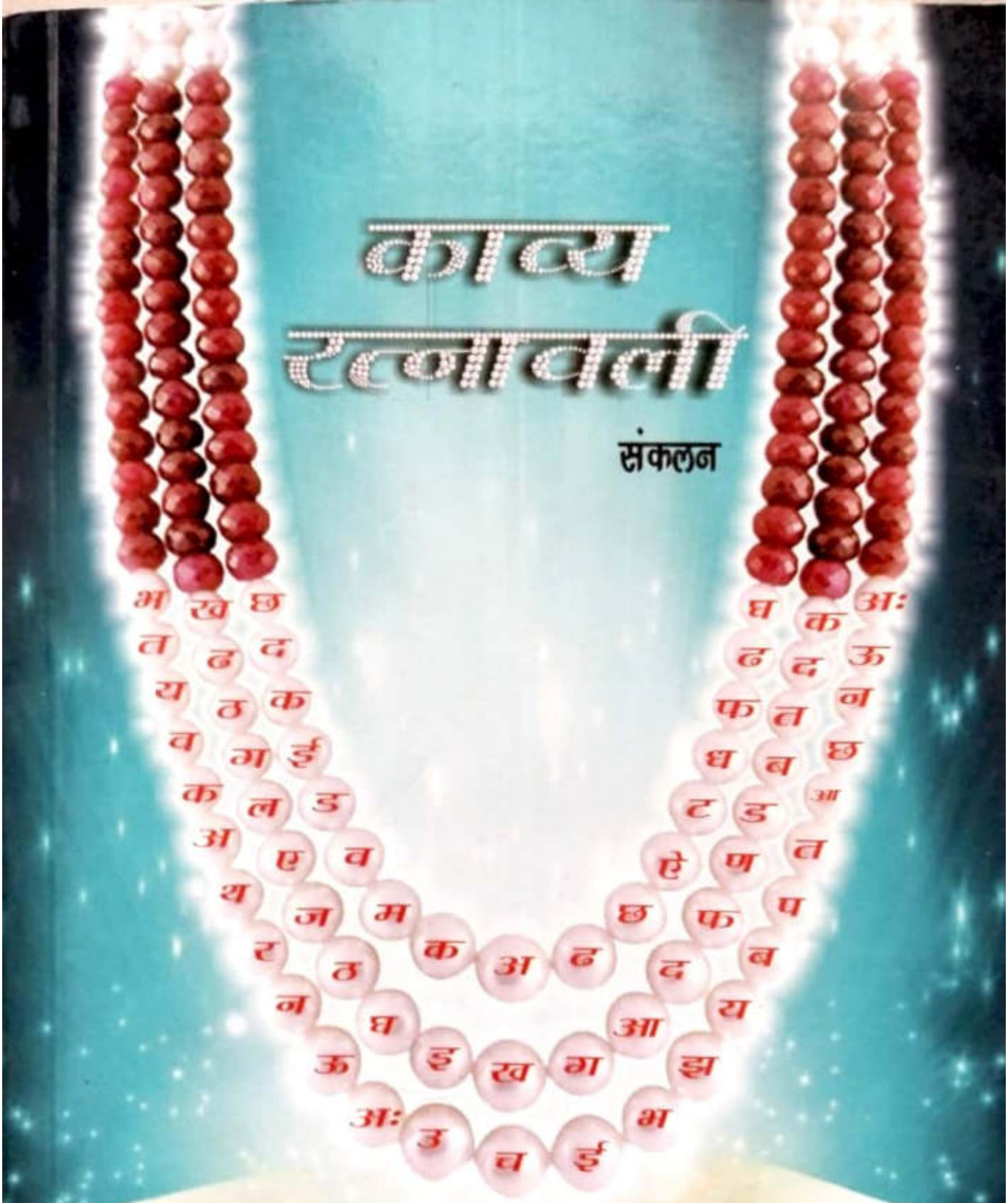

सम्पादक:
डॉ. प्रियंका सोनी 'प्रीत'

Scanned by CamScanner

काव्य रत्नावली

संकलन

संपादक

डॉ. प्रियंका सोनी 'प्रीत'

जलगाँव

SAHITYA KALASH PUBLICATION

Patiala

Scanned by CamScanner

Kavya Ratnavali

Editor
Dr. Priyanka Soni 'Preet'

Shri Kunj behind Royal Palace,
Banglow No. 1, Jay Nagar, Jalgaon- 425002
Mob. : 97653-99969
E-mail : priyankasoni.preet@gmail.com

ISBN - 978-93-86715-05-0

© Author

First Edition : 2018
Price: Rs. 400/-

Published by
SAHITYA KALASH PUBLICATION
32/3, Amar Shakti Niwas,
Mahindra Colony, Opp. Mahindra College,
Patiala-147001 (Pb.), Mob.: 098728-88174
sahityakalash@gmail.com

All rights reserved

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the writer's prior written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means(electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the above mentioned publisher of this book.

अनुक्रम

1. डॉ. प्रियंका सोनी 'प्रीत'
2. कविता राजपूत
3. डॉ. पल्लवी अशोक बनसोडे
4. सागर सूद
5. अलका पांडेय
6. जितेन्द्र चौहान
7. रमेश यादव
8. रचना सिंह 'रश्मि'
9. एडवोकेट रेखा 'रोशनी' किंगर
10. संजय द्विवेदी
11. मुकेश कुमार तिवारी
12. दीपक दीक्षित
13. यशेन्दा भारद्वाज
14. प्रभा पारीक
15. मनु वैश्य
16. रानी सुदेश अग्रवाल
17. आभा दवे
18. निरूपमा शर्मा
19. वन्दना श्रीवास्तव
20. चरन सिंह दर्दी
21. प्रफुल्ल श्रीनिवास
22. नन्दलाल अमरदास थापर
23. विजय राठौर
24. डॉ. आशुतोष कुमार तिवारी
25. प्रीति कांबले
26. डॉ. ओम प्रकाश हयारण 'दर्द'
27. गजमल पाटिल 'किरण'
28. डॉ. भावना सावलिया
29. मुकेश बोहरा 'अमन'
30. गणेश धनराज वडगुजर
31. शंकर जी सिंह
32. अशोक सागर मिश्र
33. अस्मिता प्रशांत 'पुष्पांजली'
34. निहाल चंद्र शिवहरे
35. डॉ. जसवीर चावला
36. डॉ. नीना छिब्बर
37. दिनेश कुमार चतुर्वेदी
38. ओज शर्मा
39. जयश्री शर्मा
40. शकुंतला सत्येन्द्र प्रसाद मिश्रा
41. पुष्पलता निवृत्तीनाथ कोली

Scanned by CamScanner

डॉ. भावना सावलिया

जन्मतिथि : 3 अप्रैल 1973
लेखन : गद्य-पद्य
व्यवसाय : अध्यापक
कृतियाँ : कविता सागर (काव्य संग्रह)
महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य में नारी चेतना (आलोचना)
पुरस्कार : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नेशनल अवार्ड जलगांव 2013
लेउआ पटेल समूह लग्न समिति ज्ञान प्रतिभा सम्मान जामनगर 2014
लेखन प्रतिभा सम्मान जाम कंडोरणा 2014
गंगा ज्ञानेश्वरी गौरव सम्मान जलगाँव 2015
सारस्वत सम्मान राजकोट 2016
पता : भावना एन सावलिया, तालुका, गोंडल, जिला राजकोट, सौराष्ट्र (गुजरात), मु. हरमडिया
पिन कोड 360411
मोबाइल : 8849842456
ईमेल : 9879650974
savaliabhavna501@gmail.com

क्या नहीं है तू?

अंधेरे घरों के दीप का उजाला है तू।
भटके समाज की मशाल का प्रकाश है तू।
पूर्णिमा के चाँद की धवल रोशनी है तू।
ग्रीष्म के मध्याह्न का प्रखर तेज है तू।
टूटे दिलों का अटूट बंधन है तू।
घायलों का सुखद मरहम है तू।
राखी का रेशमी प्रेम का धागा है तू।
अखण्ड शक्ति का अमोघास्त्र है तू।
अमावस्या की रात के सितारे हैं तू।
जीवन के ज्वार-भाट का साहिल है तू।
दुष्टों को दामने की महाशक्ति है तू।
भक्तों की श्रद्धा की प्रेम-भक्ति है तू।
कदम-कदम पर बेसहारा का सहारा है तू।
पीड़ितों के आँसू थामने का कंधा है तू।
मुरझाए चेहरे की मुस्कान हैं तू।
बिछड़े जीवों का प्रेम-सेतु है तू।
डूबनेवालों की आशा का तिनका है तू।
घृणित पीड़ितों के फरिश्ता है तू।
सृष्टि की अद्भुत अमर प्रकृति है तू।
नारी, आज भी सृष्टि का रहस्य: क्या नहीं है तू?

हमारा जीवन उज्जवल बने

हमारा जीवन उज्जवल बनें ऐसी कामना करें,
सद्भावों के विचारों से हम नित स्नान करें।
बसंत का वैभव हम सब पर बरसता रहे,
जीवन में सत्कर्मों का श्रृंगार होता रहे।
दुष्ट असत् कर्मों से ईश्वर हमें बचाता रहे।
नेक रास्ते और ईमान से हमें सजाता रहे। हमारा जीवन....
सुख समृद्धि के सागर में कहीं बहक न जाएँ,
अपने पराये जीव का हम ठेस न पहुँचाये।
कभी किसी का वाणी वर्तन से अपमान न हो जाएँ।
गलती से कर्म से किसी का नुकसान न हो जाएँ। हमारा जीवन...
जितना हो सके उतना सबको प्रेम बाँटते चले,
बाँहें फैला के दिल से सबको गले लगाते चले।
सूखे हृदय स्थल में अमी झरना नित बहाते रहें।
तृषितों को तरल तृषा से हम तृप्त करते रहें। हमारा जीवन....
सृष्टि की प्रकृति है हमारा जीवन दर्पण,
पर्यावरण की सुरक्षा हमारा कर्तव्य परायण।
होता रहे चेतना का उर उमंग-समर्पण।
नित मंगल भाव की हो हमारी कामना अर्पण। हमारा जीवन....

Scanned by CamScanner

पत्थर की चाह

मेरी चाह नहीं, रानी के झरोखे में स्थान पाने की,
मेरी चाह नहीं, ताजमहल की नक्काशी बनने की,
मेरी चाह नहीं, मन्दिर के देवता बनने की,
मेरी चाह नहीं, लोगों के दिल की श्रद्धा पाने की,
बस चाह इतनी कि....
वीर जवानों की पाँव की पटिया बनूँ।
मेरी चाह नहीं, गिरजाघर में स्थान पाने की,
मेरी चाह नहीं, शिवालय का महादेव बनने की,
मेरी चाह नहीं, मुक्त-मणियों के हार बनने की,
मेरी चाह नहीं, देवी-देवताओं के मुकुटों में मढ़ने की।
बस चाह इतनी कि...
वीर जवानों के सिर का तकिया बनूँ।
मेरी चाह नहीं, अमूल्य झवेरात बनने की,
मेरी चाह नहीं, सोने की सुन्दरता बनने की,
मेरी चाह नहीं, प्रेमी के अंगूठी में स्थान पाने की,
मेरी चाह नहीं, प्रकृति का सौन्दर्य बनने की।
बस चाह इतनी कि...
वीर जवानों की खाई का सेतु बनूँ।।
मेरी चाहत है, जवानों के घर की दीवार बनूँ,
मेरी चाहत है, जवानों की शिविर का नींव बनूँ,
मेरी चाहत है, जवानों के आतंक की झंझा की आड़ बनूँ,
मेरी चाहत है, दुश्मनों की गोली का शिकार बनूँ।।
बस चाह इतनी कि...
जितना हो सकूँ उतना वीर सूपतों का साथी बनूँ।।

त्याग - समर्पण के महात्मा हो!

ख़ुद के लिए नहीं,
हमेशा दूसरों के लिए जीते हैं।
स्वयं मुश्किलों की पघड़ी,
सजके हमको सुख देते हैं।
छोटी-बड़ी कड़वाहट न जाने,
कैसे दिल में जड़ लेते हैं।
दर्द का घूँट पीकर जीवन,
ख़ुशियाँ के तरानों से भर देते हैं।।
पापा आप कितने त्याग-समर्पण के महात्मा हो!
जीवन संघर्षों के सागर में,
स्वयं गोताखोर बनते हैं।
अनमोल मोतियों से,
हमारा जीवन ख़ुद सजाते हैं।
आपका आजीवन परिश्रम,
संतानों को समर्पित करते हैं।
जीवन भर की कमाई,
परिवार को अर्पण करते हैं।।
पापा आप कितने त्याग-समर्पण के महात्मा हो!
पापा ख़ुद की दुख पीड़ा की,
चिंता या परवाह नहीं करते हैं।
परिवार या बेटे की चिंता,
अपना जीवन कर्म-बनाते हैं।
जिम्मेदारी अपनी ही समझ के,
पिता का दर्जा निभाते हैं।
बेटी-पिता का सारा जीवन,
पारस्पर्य कलेजा बनते हैं।।

Scanned by CamScanner

पापा आप कितने त्याग-समर्पण के महात्मा हो!
पापा में अद्भुत शक्ति है,
घर के चेहरे पढ़ने की।
हरेक दिल के सुख-दुख,
प्रेम-भाव पहचानने की।
हर पल कोशिशें रहती हैं,
सबको प्रसन्न रखने की।
फिर भी जीवनांत नहीं सोचा,
कभी किसी से अपेक्षा रखने की।
पापा आप कितने त्याग-समर्पण के महात्मा हो!
नैन के नभ में सजाते,
तारे-मण्डल के साज है।
बेटी पापा के प्राण है,
ख़ुशी है, तारे, चंदा सूरज है।
पापा बेटी के हर ख़ुशियों के,
सर का अमूल्य ताज है।
बेटी का प्रगति-उन्नति,
पिता के जीवन नाज है।।
पापा आप कितने त्याग-समर्पण के महात्मा हो!
सिर पर पापा का,
प्रेम भरे आशीर्वाद बरसते हैं।
बेटी की बिदाई के विचार से,
नैन बादल बरसते हैं,
दिल रोता है पर किसी को,
पता नहीं लगने देते हैं।
घर में आने के साथ ही,
आपकी आँखें हमको ढूँढते हैं।।
पापा आप कितने त्याग समर्पण के महात्मा हो!

Scanned by CamScanner